CBSE Test Paper 04

Ch-9 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

1. **निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   पत्तों से लदी डाल
   कहीं हरी, कहीं लाल,
   कहीं पड़ी है उर में
   मंद-गंध-पुष्प-माल,
   पाट-पाट-शोभा-श्री
   पट नहीं रही है।

   i. बसंत ऋतु में वृक्षों और पौधों में क्या परिवर्तन हो जाता है?
   ii. विविध रंग के पुष्प कैसे प्रतीत होते हैं?
   iii. पाट-पाट शोभा-श्री, पट नहीं रही है'-कथन से कवि का क्या आशय है?

2. कवि ने बादलों को अनंत के घन क्यों कहा है ?

3. अट नहीं रही है कविता का विषय स्पष्ट करें?

4. 'बादल गरजो' में कवि बादल से क्या अपेक्षा करता है ?

5. कवि बादलों से बरसने की प्रार्थना क्यों करता है?

6. निराला जी बादलों से फुहारों, रिमझिम तथा अन्य प्रकार से बरसने की न कहकर 'गरजते हुए' बरसने की याचना क्यों करते हैं? बताइए।

CBSE Test Paper 04
Ch-9 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

Answer

1. i. बसंत ऋतु में वृक्षों और पौधों में यह परिवर्तन हो जाता है कि उंकिबडालियाँ नाव पल्लवो से भर जाती हैं। उनमें कहीं हरी और कहीं लाल कोपलें फूटने लगती हैं।
   ii. प्रकृति में विविध रंग के खिले पुष्प ऐसे प्रतीत होते हैं मानो प्रकृति ने अपने हृदय पर फूलों की माला धारण की हुई हो।
   iii. उपरोक्त पंक्ति से कवि का आशय है कि बसंत ऋतु में प्राकृतिक सौन्दर्य हर स्थान पर व्याप्त है और वह सौन्दर्य इतना अधिक है कि किसी भी सीमा में नहीं समा पाता।

2. कवि ने बादलों को अनंत के घन इसलिए कहा है क्योंकि बादल ईश्वर की अनंत रचना हैं। उनका कोई अंत नहीं होता वे दूर क्षितिज तक आकाश में फैले रहते हैं इसलिए कवि ने उन्हें अनंत के घन कहा है । ये अज्ञात दिशा से आकर पूरी धरती को ढक लेते हैं और जन-जीवन को राहत प्रदान करते हैं और सभी में नवजीवन का संचार करते हैं।

3. 'अट नहीं रही है' कविता फागुन की मादकता को प्रकट करती है। फाल्गुन की सर्वव्यापकता को कवि ने प्रकृति के विभिन्न अवयव जैसे फूल,पेड़-पौधे ,पत्तियों,पक्षियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है, जिनकी शोभा चारों ओर बिखरी है। पेड़-पौधें नव-पल्लवों से लदे हुए हैं | कवि ने पूरी कविता में फाल्गुन का मानवीकरण करते हुये मन की प्रसन्नता की उस चरम स्थिति का उल्लेख किया है जो हृदय में समाये नहीं समा रही है। अतः कविता का मुख्य विषय फागुन की मादकता और सुन्दरता को स्पष्ट करना है |

4. 'बादल गरजो' में कवि बादल से अपेक्षा करता है कि वह पौरुष-मयी भीषण गर्जना-तर्जना करे और सम्पूर्ण आकाश को उस शोर से भर दें। उसका मानना है कि बादलों में इतना ओज है जिससे वह संसार में अपना प्रभाव स्थापित कर सकते हैं क्योंकि उनके हृदय में वज्र की शक्ति है |

5. कवि बादलों से बरसने की प्रार्थना इसलिए करता है क्योंकि भीषण गर्मी से धरती और सभी प्राणी व्याकुल हैं | वह गर्मी से तप्त धरती को शीतलता प्रदान करना चाहता है | उनके अनुसार धरती के लोगों ने अत्यधिक गर्मी के कारण अनेक कष्टों का सामना किया है इसलिए वह बादलों के बरसने से धरती की प्यास बुझाकर उसे शीतल करना चाहता है |

6. कवि निराला ने बादलों को क्रांति का अग्रदूत माना है | दुखी लोगों के दुःख-दर्द दूर करने के लिए वे क्रांति लाना चाहते हैं | चुपचाप परिवर्तन की बात तो वे सोचते भी नहीं हैं इसलिए वे बादलों से गर्जना करते हुए बरसने की याचना करते हैं |